IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सरकारी एवं प्राइवेट प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन

रविन्द्र कुमार सिंह (एस.आर.एफ.–शिक्षाशास्त्र)

लोक शिक्षा एवं जनसंचार विभाग, महात्मा गॉधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्याल चित्रकूट सतना, (म0प्र0)

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति का पूर्ण विकास सम्भव हो सकता है। व्यक्ति की शिक्षा प्राथमिक शिक्षा से ही प्रारम्भ होती, भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्राथमिक शिक्षा का प्रारम्भ वैदिक काल से माना जाता है, बालक को वैदिक काल में शिक्षा ग्रहण करने के लिए उपनयन संस्कार एक अनिवार्य प्रक्रिया थी। भारत अपनी संस्कृति एवं शिक्षा के लिए सम्पूर्ण संसार में प्रसिद्ध रहा है। इसका एक मात्र आधार शिक्षा ही रहा है शिक्षा रूपी प्रकाश की ज्योति को फैलाने वाला शिक्षक ही मुख्य रूप से है। वैदिक काल में शिक्षक अर्थात 'गुरू' अतिविद्वान, स्वध्यायी, धर्मपरायण तथा अति संयमी होते थे। उस समय उन्हे समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था, शिक्षक बालक के सर्वागींण विकास की धुरी होता है। प्रायः यह देखा गया की शिक्षक अपने शिक्षण व्यवसाय को पूर्ण रूप से निर्वहन करने में अपने आप को असमर्थ पाते है क्योंकि वे किसी प्रकार की दुश्चिन्ता से ग्रस्त रहते है जिससे उनका शिक्षण कार्य प्रभावित हुआ है शिक्षक के प्रभावित होने से शिक्षण कार्यक्रम व्यवस्थित ढंग से संचालित नहीं हो सकता है, दुश्न्चिता से आशय किसी प्रक्रिया में रूकावट से होता है। एक व्यक्ति, जो दुश्न्चिता से पीड़ित होता है, वह कार्य को करने से पूर्ण शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता। इस प्रकार यह विचार किया जाता है कि दुश्न्चिता क्रिया में रूकावट डालती है और इस तरह सीखने की गति में कमी आ जाती है किन्तु यह विचार पूर्णतः सत्य नहीं है क्योंकि दुश्न्चिता सीखने में रूकावट भी डाल सकती है और प्रेरित भी कर सकती है।

लक्ष्मी, एस. (1990) द्वारा प्रशिक्षु–शिक्षकों के लिए आयोजित उपलब्धि प्रेरणा विकास कार्यक्रम का उनके कार्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया। अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुए कि उपलब्धि अभिप्रेरणा के विकास में इस हेतु चलाये गये कार्यक्रमों का सार्थक सकारात्मक प्रभाव पड़ा। प्रशिक्षार्थियों की उपलब्धि बढ़ाने के लिए चलाये गये कार्यक्रमों से उनकी दुश्चिन्ता कम हुई। निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्रों की अपेक्षा उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्रों को, उपलब्धि अभिप्रेरणा कार्यक्रम से अधिक लाभ हुआ। निम्न दुश्चिन्ता

वाले छात्रों की अपेक्षा उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्रों के कार्य में अधिक प्रगति देखी गयी। उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्रों की अपेक्षा निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्रों की अभ्यास शिक्षण में अधिक प्रगति देखी गयी। ***गुप्ता (2004)*** ने पाया कि जूनियर राष्ट्रीय महिला फुटबॉल खिलाड़ियों में मध्यम दुश्चिंता, मध्यम आत्मविश्वास, न्यून उपलब्धि अभिप्रेरण तथा मानसिक कठोरता का निम्न स्तर पाया जाता है। ***देवी (2004)*** ने पाया कि इम्फाल एवं जोरहट के विद्यार्थियों के दुश्चिंता स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। ***द्विवेदी एवं गुंथे (2005)*** ने पाया किशैक्षणिक दुश्चिंता का स्तर अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यार्थियों में हिन्दी माध्यम वाले विद्यार्थियों में सार्थक रूप से अधिक पाया जाता है। ***नूनले (2013)*** ने परिवारों के साथ जुड़ाव वाले व्यक्तियों में दुश्चिंता का स्तर, एकल रूप से जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों में दुश्चिंता स्तर से कम पाया। ***मासोमेह (2013)*** ने पाया कि किशोर विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय का उनके द्वारा व्यक्त चिन्ताओं के स्तर में सार्थक सहसंबंध है। ***कुमारी एवं कोर (2014)*** ने पाया कि पूर्व ऋतु चक्रकाल से ऋतु चक्रकाल तक निम्न शीलगुण दुश्चिंता उपलब्धि सुधार के साथ सहयोगी पाई जाती है। ***होल्ट्ज एवं टीमॉथी (2015)*** ने पाया कि प्रताड़ित किये गये निर्वासितों में दुश्चिंता अप्रताड़ितों की अपेक्षा अधिक पाई।

दुश्न्चिता के क्षेत्र में किये गये अनेक अध्ययनों से कुछ रोचक तथ्य सामने आये, जैसे–उच्च स्तर की दुश्चिंता साधारण सीखने में तो सहायक होती है किन्तु जटिल पदार्थो को सीखने में अवरोध डालती है। यह परिणाम शिक्षक के लिये कठिन समस्या उत्पन्न कर देता है। वह निर्धारित नहीं कर पाता है कि कितनी दुश्चिंता मध्य स्तर की है और कितनी उच्च स्तर की है। इस संबंध में वह अपना कुछ निर्णय ले भी ले तो उसके लिये अन्य कठिनाई यह है कि कुछ बालक जरा सी दुश्चिंता से अपनी सीखने की गति धीमी कर देते हैं और कुछ अधिक दुश्चिंता से भी सीखने की गति धीमी कर देते हैं और कुछ अधिक दुश्चिंता से भी सीखने की गति बढ़ाते रहते हैं। अतएव किस बालक को सीखने की गति बढ़ाने के लिये कितनी दुश्न्चिता की जाये, निर्धारित करना सम्भव नहीं तो जटिल अवश्य है।

एक शिक्षक की संतुष्टि और चिंता मुक्त व्यवहार बहुत से बच्चों के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है जो देश के विभिन्न संस्थानों, प्रतिष्ठानों आदि में जाकर देश के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकते है। अगर वहीं शिक्षक चिंता ग्रसित रहेगा और अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं होगा तो कार्य भी अच्छी तरह से नही करेगा, जिसके कारण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होने के साथ ही हजारों छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ होगा जिससे राष्ट्र का विकास अवरुद्ध होगा। अतः इस दृष्टिकोण से शिक्षकों की दुश्चिंता का अध्ययन करना महत्वपूर्ण कार्य है। अतः शोधकर्त्ता ने शिक्षकों के दुश्चिन्तित रहने का कारण खोजने का प्रयास किया है।

शोध उद्देश्य

1. सरकारी एवं प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला व पुरुष शिक्षकों की दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत महिला व पुरुष शिक्षकों की दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. सरकारी एवं प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला व पुरुष शिक्षकों की दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत महिला व पुरुष शिक्षकों की दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के समस्त अनुदानित व स्ववित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक सम्मिलित है। आँकड़ो के संग्रहण हेतु बहुस्तरित यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है, इस प्रकार बहुस्तरित यादृच्छिक विधि का प्रयोग करते हुए प्रयागराज जनपद के कुल 200 प्राथमिक विद्यालयों से 100 शिक्षकों का चयन किया गया। शिक्षकों की दुश्चिन्ता के मापन हेतु शर्मा, भारद्वाज तथा भार्गव द्वारा निर्मित दुश्चिन्ता मापनी का प्रयोग किया गया है। आँकड़ो के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन और टी–अनुपात का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण

परिकल्पना 1– सरकारी एवं प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–1.1

सरकारी एवं प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की दुश्चिन्ता में अन्तर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन व टी–अनुपात

क्र. सं.	दुश्चिन्ता	सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक(N=50)		प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक (N=50)		टी अनुपात	सार्थकता स्तर
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
1.	दुश्चिन्ता	7.72	5.29	11.22	4.94	2.04	सार्थक

उपरोक्त तालिका संख्या 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की दुश्चिन्ता सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 7.72 तथा मानक विचलन 5.29 है जबकि प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की दुश्चिन्ता सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 11.22 व मानक विचलन 4.94 है। सरकारी एवं प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मध्यमानों की तुलना के लिए परिगणित टी–अनुपात 2.04है जो स्वतंत्रता के अंश 99 के लिए 0.01 सार्थकता स्तर पर टी–सारणी मान से अधिक होने के कारण सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी एवं प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की दुश्चिन्ता में सार्थक अन्तर है अर्थात् सरकारी एवं प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की दुश्चिन्ता समान नहीं है।

परिकल्पना 2–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला व पुरुष शिक्षकों की दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–1.2

सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला व पुरुष शिक्षकों की दुश्चिन्ता में अन्तर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन व टी–अनुपात

क्र. सं.	दुश्चिन्ता	सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक (N=25)		सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षक (N=25)		टी अनुपात	सार्थकता स्तर
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
1.	दुश्चिन्ता	8.60	4.79	6.84	3.11	3.41	असार्थक

उपरोक्त तालिका संख्या 1.2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की दुश्चिन्ता सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 8.60 तथा मानक विचलन 4.79 है जबकि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की दुश्चिन्ता सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 6.84 व मानक विचलन 3. 11 है। सरकारी एवं सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मध्यमानों की तुलना के लिए परिगणित टी–अनुपात 3.41 है जो स्वतंत्रता के अंश 49 के लिए 0.01 सार्थकता स्तर पर टी–सारणी मान से अधिक होने के कारण असार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों एवं सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों शिक्षकों की दुश्चिन्ता में सार्थक अन्तर है अर्थात् सरकारी एवं प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की दुश्चिन्ता समान नहीं है।

परिकल्पना 3–प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत महिला व पुरुष शिक्षकों की दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–1.3

प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत महिला व पुरुष शिक्षकोंकी दुश्चिन्ता में अन्तर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन व टी–अनुपात

क्र. सं.	दुश्चिन्ता	प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक (N=50)		प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षक (N=50)		टी अनुपात	सार्थकता स्तर
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
1.	दुश्चिन्ता	12.48	4.71	10.56	5.06	2.31	असार्थक

उपरोक्त तालिका संख्या 1.3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की दुश्चिन्ता सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 12.48 तथा मानक विचलन 4.71 है जबकि प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की दुश्चिन्ता सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 10.56 व मानक विचलन 2. 31 है। सरकारी एवं सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मध्यमानों की तुलना के लिए परिगणित टी–अनुपात 2.31 है जो स्वतंत्रता के अंश 49 के लिए 0.01 सार्थकता स्तर पर टी–सारणी मान से अधिक होने के कारण असार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों एवं सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों शिक्षकों की दुश्चिन्ता में सार्थक अन्तर है अर्थात् सरकारी एवं प्राइवेट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की दुश्चिन्ता समान नहीं है।

निष्कर्ष और शैक्षिक निहितार्थ :

दुश्चिन्ता एक निरर्थक भाव है जो किसी कार्य की क्षमता को प्रभावित करती है यह शिक्षक की शैक्षिक कार्य प्रणाली को दिशाहीन करती है। यदि शिक्षक दुश्चिन्तित नहीं है तो वह शिक्षण कार्य को पूर्ण क्षमता के साथ कार्य करते है वहीं दुश्चिन्तित शिक्षक विभिन्न समस्याओं से घिरा नजर आता है और उसके भाव शिक्षक की तरह न होकर एक एकान्त वासी के रूप में सामने आती है। यह देखा गया है कि सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों में दुश्चिन्ता का भाव कम देखने को मिलता है क्योंकि वे अपने भविष्य के प्रति सुरक्षा की भावना रहती है वहीं प्राइवेट विद्यालयों के शिक्षकों में दुश्चिन्ता की भावना अधिक रहती है जिसका कारण उनका भविष्य अनिश्चित रहने से है वे शिक्षण – प्रशिक्षण का कार्य तो

करते है लेकिन वे दुश्चिन्ता ग्रस्त रहते है । महिला शिक्षकाएं भी अपने आपको दुश्चिन्ता ग्रस्त पाती है क्योंकि विद्यालय के अधिक कार्यभार, व्यक्तिगत समस्याएं एवं सरकारी नीतियों का विद्यालयों में उचित समय पर न लागू होने से भी वे दुश्चिन्ता ग्रस्त रहती है। अतः विद्यायलयों में एक ऐसा संघ होना चाहिए जो विद्यालय एवं शिक्षकीय समस्याओं का समाधान कर सके। यह सर्वविदित है कि मानसिक रूप से स्वस्थ्य शिक्षक शिक्षण कार्य को पूर्ण क्षमता के साथ करता है जिससे छात्र एवं शिक्षकों के मध्य विद्यलयों में उचित शैक्षिक वातावरण बना रहता है।

सन्दर्भ

- लक्ष्मी, एस., (1990). *कन्डक्टिंग एचीवमेन्ट मोटीवेशन डेवलपमेन्ट प्रोग्राम ऑन टीचर ट्रेनीस एण्ड स्टेडिंग इट्स इफेक्ट आन देयर परमारमेन्स,* पी–एच.डी., एजूकेशन, एम.एस.यू.।
- मासोमेह, खोसराखी, (2013). *किशोर विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय तथा दुश्चिंताओं के मध्य पाये जाने वाले सम्बंधों का तुलनात्मक अध्ययन,*इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रैक्ट, वाल्यूम जनवरी 2013, पृष्ठ 201।
- नूनले, माइकेल, (2013): *इनवाल्वमेंट ऑफ फैमिलीज इन इंडियन साइकायट्री,* इंडियन साइकॉलॉजिकल एब्स्ट्रेक्टस एण्ड रिव्यूज, वॉ. 7 नं.1।
- होल्ट्ज एवं टीमॉथी, एच., (2015). *रिफ्यूजी ट्रोमा बनाम टोर्चर ट्रोमाः ए रेट्रोस्पेक्टिव कन्ट्रोल्ड कोहरेट ऑफ तिबेतन रिफ्यूजी,* जर्नल ऑफ नर्वस एण्ड मेंटल डिजीज, वॉ 186 (1) पृ. सं. 24–34।
- कुमारी, वीना एवं कोर, फिलिप जे., (2014). *ट्रेड एंग्जाइटी, स्ट्रैस एण्ड द मैस्चुरल सायकलः इफैक्ट्स ऑन रावनस स्टैण्डर्ड प्रोग्रेसिव मैटिसेज,* पर्सनेलिटी एण्ड इंडिविडुअल डिफरेन्सेज, पृ. सं. 615–623।
- गुप्ता, वंदना, (2004). *साइकॉलॉजिकल प्रोफाइल्स ऑफ नेशनल वूमन फटबॉल प्लेयर्स,* पी.एच.डी., शारीरिक शिक्षा, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर ।
- देवी, पी.टी., (2004). *टू स्टडी एंग्जाइटी लेवल अंमग कॉलेज गोइंग स्टूडेन्ट,*जर्नल ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च एण्ड एक्सटेंशन, वा, 41 (4) पृ. सं. 19–27।
- द्विवेदी, एन. एवं गुंथे, (2005). *इन्फ्लुएन्स ऑफ मीडियम ऑफ इन्स्ट्रक्शन ऑन लेवल ऑफ एकेडमिक एंग्जाइटी अमंग स्कूल स्टूडेन्ट्स,* एज्यूट्रैक्स, वॉ, 5(4), दिस., पृ.सं. 31–32।
- गुप्ता एस0 पी0 (2013). सांयिकीय विधियां, शारदा प्रकाशन इलाहाबाद.
- सिंह अरुण कुमार (2013). अनुसंधान की विधियां, शारदा प्रकाशन इलाहाबाद.